वाल्मीकि-रामायण में दलितों की स्थिति

डॉ० प्रियम्वदा, एम०ए०, एम०एड०, पी-एच०डी०

आदिकवि वाल्मीकि विरचित रामायण में दलित के सम्बन्ध में विशेषरुपेण विचार-विमर्श किया गया है । दलित संस्कृत भाषा का शब्द है । यह शब्द दल् धातु के साथ 'क्त' प्रत्यय जोड़ने से बनता है । दल् धातु के दो अर्थ होते हैं । प्रथम- विदारण और द्वितीय विकसन । विदारण का अर्थ फटने से है । इस अर्थ को समझने के लिए भवभूति के उत्तररामचरितम् के प्रस्तुत श्लोक को देखा जा सकता है –

"अपि ग्रावा रोदित्यापि दलति वज्रस्यहृदयम् !"

संस्कृत साहित्य के सुप्रसिद्ध कवि गीतगोविन्दकार जयदेव ने भी दलित शब्द के उपर्युक्त अर्थ को रेखांकित करते हुए दशावतार स्तुति में लिखा है-

"दलति हरण्यकशिपुतनुभृडगम् !"

दलित शब्द का दूसरा अर्थ विकसित होना या प्रफुल्लित होना है । महाकवि भारवि ने किरातार्जुनीयम् महाकव्य के १० वे सर्ग के ३९ श्लोक में इस प्रकार कहा है ।

"न दलति निचये तथात्पलानाम् ।"

सुप्रसिद्ध टीकाकार मल्लिनाथ ने भी दलति-विकसित लिखकर इसी अर्थ को सुस्पष्ट कर दिया है । इसी प्रकार कृष्ण मिश्र ने प्रबोध-चंद्रोदय नाटक में लिखा है –

"त्रैलोक्यं सहज प्रकाश दलितम् ।"

अर्थार्त तीनों लोक सहज प्रकाश में उज्जवलित है । इसके अतिरिक्त संस्कृत हिन्दी-कोश और शब्दार्थ चिंतामनिकोश में भी दलित शब्द के उपर्युक्त दोनों अर्थ प्राप्त होते हैं ।

सम्प्रति, रामायण के दलित शब्द का अभिप्राय इस तरह समझा जा सकता है । समाज में जिसका दारुण-दलन, दोहन और शोषण होता रहा है, वह दलित है । जो समाज कि मुख्यधारा से वंचित है, उपेक्षित है और है प्रताड़ित, वही दलित है । बंधन जिसका कंगन है, उत्पीड़न जिसका इन्धन है, अधिकार-हरण जिसका आलिंगन है- वही दलित है ।

विपत्ति जिसकी नियति हो, संपत्ति जिसकी स्वप्निल स्मृति हो, क्रांति जिसकी प्रसुप्त प्रवृति हो - वही दलित है । दुर्भाग्य जिसका पर्याय हो, दास्य जिसका व्यवसाय हो, और दरिद्रता जिसका अमित अध्याय हो, वही दलित है ।

बहिस्कार जिसका सत्कार माना जाये, बेगार जिसका दैनिक त्यौहार हो और फटकार तथा तिरस्कार जिसका पुरस्कार माना जाये वही दलित है । अभाव जिसका भाग्य, अन्याय जिसका साक्ष्य और विलाप जिसका काव्य हो वही दलित । शोक जिसका आहार हो, अश्रु जिसका उद्गार हो और अभिशाप जिसका उपहार हो वही दलित है । अपमान जिसका प्रतिमान हो, पुरुषार्थ जिसका धनुष-वाण हो, अंगुठा जिसका अनुपम दान हो वही दलित है । दीनता जिसकी गृहिणी हो, दासता जिसकी भगिनी हो तथा अस्पृश्यता जिसकी संगिनी हो – वही दलित है । श्रम को साध्य और कर्म को आराध्य मान कर भी जो दैन्य-दंश को झेलने के लिए विवश हो – वही दलित है ।

वाल्मीकि रामायण के अध्ययन से परिज्ञात होता है कि रामायणकाल में शूद्रों की व्यावहारिक स्थिति अत्यंत संतोषप्रद थी । सभी प्रकार के सामाजिक, राजकीय तथा धार्मिक उत्सवों में उनकी सहभागिता थी । बालकाण्ड के षष्ठ सर्ग में रजा दशरथ के शासनकाल में अयोध्या और वहाँ के नागरिकों कि उत्तम स्थिति का वर्णन किया गया है ।

"तस्मिन् पुरवरे हृष्टा धर्मात्मानो बहुश्रुता: ।
नारास्तुष्टा धनै: स्वै: स्वैरलुब्धा: सत्यवादिन: ।।" १/६/६

अर्थात् उस उत्तम नगर में निवास करने वाले सभी मनुष्य प्रसन्न, धर्मात्मा, बहुश्रुत, लोभरहित, सत्यवादी तथा अपने-अपने धन से संतुष्ट रहने वाले थे । वहाँ एक भी ऐसा परिवार नहीं था जिसके पास उत्कृष्ट पदार्थो का प्रचुर मात्रा में न हो, जिसके धर्म, अर्थ और काम-रूप पुरुषार्थ सिद्ध न हो गये हों । उनके पास गाय, बैल, घोड़े, धन-धान्य का अभाव नहीं था । वहाँ कोई भी कृपण, क्रूर, कामी, मुर्ख और नास्तिक मनुष्य नहीं था ।सभी धर्मशील, संयमी, प्रसन्नचित, शील और सदाचार से संपन्न थे । वहाँ सभी कुण्डल, मुकुट, तथा पुष्पहार से अलंकृत थे । भोग सामग्रियों कि प्रचुरता थी । सभी स्नान कर साफ-सुथरे होकर चन्दन और गुलाल जैसे सुगन्धित पदार्थो से अपने अंगो को अलंकृत रखते थे ।

वहाँ सभी बाजूबंद, स्वर्णपदक तथा हाथ के आभुषणो से अलंकृत रहते थे । वहाँ के सभी नागरिक अग्निहोत्र और यज्ञ करते थे । वहाँ क्षुद्र, चोर, सदाचारशुन्य और वर्णसंकर नहीं थे । दशरथ के न्यायपूर्ण शासन के कारण सभी संतुष्ट थे । इस वर्णन क्रम में सिद्ध होता कि अयोध्या के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र सभी देवताओ और अतिथियों कि पूजा करते थे । दुसरे कि भलाई करने में सदैव तत्पर रहते थे ।
वाल्मीकि-रामायण के बालकाण्ड के १३ वे वर्ग में यज्ञ कि तैयारी का वर्णन समुपलब्ध होता है । वसिष्ठ जी ने सभी प्रबंधको एवम् शिल्पियों को बुलाकर आदेश दिया कि ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे सभी वर्णों के व्यक्ति भली-भांति सत्कृत और सम्मानित हों । काम, क्रोध के आवेश में किसी में भी व्यक्ति का अनादर न ही ।

"सर्वे वर्णा यथा पूजां प्राप्नुवन्ति सुसत्कृता: ।
न चावज्ञा प्रयोक्तव्या कामक्रोधवशादपि ।।"

जो शिल्पी मनुष्य यज्ञकर्म कि आवश्यक तैयारी में लगे हों, उनका बड़े छोटे का ख्याल रखकर विशेष रूप के समादर करना चाहिए । जो सेवक या कारीगर धन और भोजन आदि के द्वारा सम्मानित किये जाते हैं वे सब परिश्रमपूर्वक कार्य करते हैं । उनके किये हुए सारे कार्य सुन्दर ढंग से संपन्न होते हैं । उसका कोई कार्य बिगड़ने नहीं पाता है । अत: तुम सब प्रसन्नचित्त होकर ऐसा ही करो । तब वसिष्ठ जी ने सुमंत्र जी को बुलाकर कहा- इस पृथ्वी पर जो धार्मिक रजा, ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य और सहस्रों शुद्र हैं, उन सबको इस यज्ञ में आने के लिए निमंत्रित करो ।

" निमंत्रयस्व नृपतीन् पृथ्विवयां ये च धार्मिका: ।
ब्राह्मान् क्षत्रियान् वैश्याञ्शुद्रांश्चैन सहस्रश: ।।" १-१३-२०

अर्थात पृथ्वी पर जो हजारों धार्मिक ब्राहमण, क्षत्रिय - वैश्य और शुद्र राजा हैं उन सबको निमंत्रण भेजा जाए । इससे प्रमाणित होता है कि शुद्र भी राजा होते थे । अयोध्या के बगल में ही निषादराज गृह राजा था जिसने राम कि बहुत सहायता कि थी ।

वाल्मीकि-रामायण के अंतर्गत बालकाण्ड के ५८ वे सर्ग के त्रिशंकु का वर्णन मिलता है । महाराज हरिश्चंद्र के पिता सत्यव्रत थे । उन्हें ही त्रिशंकु कहा जाता है । सत्यव्रत ने वसिष्ठ के पुत्रों से निवेदन किया कि वे लोग उसे सशरीर स्वर्ग भेजने के लिए यज्ञ का आयोजन करें । किन्तु, उन लोगों ने वैसा करने से इंकार किया । तब उसने कहा कि अब में किसी अन्य पुरोहित कि शरण में चला जाऊंगा । इसके बाद वसिष्ठ पुत्रों ने राजा सत्यव्रत को चाण्डाल होने का शाप दिया ।

"शेपू: परमसंकु द्वाश्चाण्डालत्वं गिमिष्यसि ।" १-५८-९

शाप के बाद राजा सत्यव्रत चाण्डाल हो गये । फिर उन्होंने विश्वामित्र से यज्ञ कराने का अनुरोध किया । विश्वामित्र ने शरणागत कि विनती स्वीकार कर ली । एक चाण्डाल को सशरीर स्वर्ग भेजने के लिए यज्ञ का आयोजन किया गया । इस संबंध में पुरोहितो कि प्रतिक्रिया को जानने के लिए विश्वामित्र ने अपने शिष्यों को विभिन्न दिशाओं में भेजा । शिष्यों ने सुचना दी कि महोदय ऋषि और वसिष्ठ के पुत्रों ने इस यज्ञ के आयोजन कि निंदा कि और वे इस यज्ञ में भाग लेने नहीं आयेंगे । उनके अतिरिक्त सभी आमंत्रित पुरोहित यज्ञ में आ रहे हैं । इससे सिद्ध होता है कि इन तमाम ऋषियों को चाण्डाल शारीर द्वारा यज्ञ करने और सशरीर स्वर्ग भेजने में कोई आपत्ति नहीं थी । जब विश्वामित्र को इस बात कि सूचना मिली तब उन्होंने वसिष्ठ पुत्रों को भयंकर शाप देकर भस्म जार दिया और कहा – अब ये सात सौ जन्मों तक मुर्दों कि रखवाली करनेवाली और कुत्तों का मांस खाकर जीनेवाली क्रूर मुष्टिक जाति में ही जन्म लेते रहेंगे ।

"सप्तजातिशतान्येव मृतपा: सम्भवन्तु ते ।
श्वमांस नियताहारा मुष्टिका नाम निघृणा: ।।" बा. का. ५९-१९

इसके अतिरिक्त विश्वामित्र ने शुन:शेप के प्रसंग में जब अपने पुत्रों को आज्ञा का विरोध करते पाया, तब मधुछन्दा से अग्रज ५० पुत्रों को शाप दिया कि तुम सब भी वसिष्ठ के पुत्रों कि तरह कुत्ते का मांस खानेवाले मुष्टिक जाति में एक हज़ार वर्षो तक इस पृथ्वी पर रहोगे ।
"श्वामांसभोजिन: सर्वे दासिष्ठा इव जातिषु ।
पूर्ण वर्ष सहस्रं तु पृथिव्यामनुत्स्यथ ।।" बा. का . ६२/१७

उर्पयुक्त दोनों उदहारण से यह सिद्ध होता है कि डॉ० अम्बेडकर ने जो यह सिद्दान्त दिया कि शुद्र पहले क्षत्रिय थे, ब्राह्मणों ने संघर्ष में उन्हें हीन बनया गया उसका अधिकांश समर्थन होता है । वसिष्ठ के वंशज चाण्डाल के कुल में उत्पन्न हुए ।

अयोध्या कांड के प्रारम्भ में श्री राम के राज्याभिषेक कि घोषणा जनता के अनुमोदन से होती है । महाराज दशरथ ने बूढ़ा होने के कारण अपने को असमर्थ मानकर अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम को राजा बनाने का प्रस्ताव समुपस्थित सभासदों, एवं नागरिको के बीच में रखते हुए कहा था –

" यदिदं मेऽनुरुपार्थ मया साधु सुमन्त्रितम् ।

भवन्तो मेऽनुमन्यन्तां कथं वा करवाण्यहम् ।।" अयो.....

राजा दशरथ का यह भी सुझाव था कि यदि आपलोग कोई विकल्प बताना चाहते हो तो अपना-अपना सुझाव दें । अन्त में, सबने राजा दशरथ से प्रार्थना की- हे महाराज ! आप विष्णु के समान पराक्रमी अपने पुत्र श्रीराम को शिघ्रातिशीघ्र राजसिंहासन पर बैठाईये, क्योंकि श्रीराम सभी लोगों के हित में सदैव संलग्न रहते हैं । किन्तु मन्थरा की कुबुद्धि से या मंदबुद्धि से कैकई प्रभावित हो जाति है । उसकी हठधर्मिता के कारण राम को वन जाना पड़ा । उनके वनगन के समय नागरिकवासियों की आँखों से इतने आँसू गिरे कि धरती भींग गयी । राम के वन-गमन के समय ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शुद्र सभी अच्छी नश्ल के घोड़े, हाथी, ऊँट, गधे और रथ को छोड़कर वन कि ओर चलने लगे ।

जब भरतजी श्रीराम से मिलने जाते हैं उस समय उनके साथ ब्राहमण, क्षत्रिय तथा शुद्र सभी चल पड़े । इससे यह सिद्ध होता है कि समाज में प्राय: सबकी आर्थिक स्थिति एक सामान थी । किसी भी वर्ण की हीन स्थिति नहीं थी । सामाजिक समता कि स्थिति का संकेत इस श्लोक से मिलता है –

"इत्येवं कथ्यन्तस्ते सम्प्रहृष्टा: कथा: शुभा: ।
परिष्वजानाश्चान्योंन्यं ययुर्नागरिकास्तदा ।।" अयो ८३-१०

अयोध्या के सभी नागरिक एक दूसरे को गले लगाकर हर्षातिरेक का प्रदर्शन कर रहे थे । कहीं ऊँच नीच का भव नहीं था । उनकी इस यात्रा में मणिकार, कुम्भकार, सुत्रकर्म विशेषज्ञ, शस्त्रोपजीवी मायूरक, क्राकचिक, वेधक, रोचक, दन्तकार, सुधाकार, गन्धोपजीवी, स्वर्णकार, कम्बलकरक, स्नापकोषनोवक,वैध-धूपक, शौण्डिक, रजक, दर्जी, ग्राम घोष महत्तर, शैलूष, कैवर्त्तक और वेदविद्द ब्राहमण सम्मिलत थे । इनमे अधिकांश लोग शुद्र वर्ण के थे । जैसे-धोबी, दर्जी, मल्लाह, कुम्हार, बढई, लोहार, कहार, गरेरिया, इत्यादि गरीब वर्ण के लोग थे । भरत की सेना में सभी वर्णों के लोग सम्मिलत होते थे । रामायण के बालकाण्ड तथा अयोध्याकांड में वर्णित प्रमुख घटनाओं से सिद्ध होता है कि दलितों कि पूरी सहभागिता निश्चित रूप से थी । इतना ही नहीं, अरण्यकाण्ड से श्रीराम का वन विचरण धर्मप्रयाण है जिसमें वनवासी दलितों कि मुख्य भूमिका देखी जाती है । श्रीराम ने अपने देश के दलितों को साथ लेकर धर्म की कीर्तिपताका फहराई थी । उनके साथ निषाद, केवट, वानर, ऋक्ष जैसे वंचित और अपेक्षित वर्गों के असंख्य सदस्यों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया । फादर कामिल बुल्के अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'रामकथा : उत्पत्ति और विकाश' में लिखते है कि ये वानर, ऋक्ष तथा राक्षस विंध्यप्रदेश और मध्य भारत कि आदिवासी प्रजातियाँ थी । रामायण के वानर मनुष्यों कि तरह बुद्धिसम्पन्न थे । वे मानवीय भाषा बोलते थे । कपड़े पहनते थे । घरों में निवाश करते थे । विवाह संस्कार को मान्यता देते थे और रजा के शासन के अधीन रहते थे । इससे सिद्ध होता कि तत्कालीन वानर केवल वानर नहीं थे । बल्कि उनकी अपनी संस्कृति और सामाजिक व्यवस्था थी ।

दूसरे शब्दों में उन्हें, जनजाति कहा जा सकता है । रामायण के वानर, ऋक्ष, गीध वास्तव में आदिवासी थे । श्रीराम के वनगमन के प्रारम्भ में ही मार्ग में निषादराज गृह से उनकी मित्रता होती है । उसने आजीवन सखाभाव बनाये रखा । सीता अपहरण के संकटकाल में जटायु ने अपनी जान-जोखिम में डालकर सीता को बचाने का प्रयास किया । इतना ही नहीं, इसी क्रम में उसने प्राणों का बलिदान दिया । उसने रावण को धिक्कारते हुए कहा-अरे रावण ! तू राजा है, राजा का कर्त्तव्य रक्षा करना है । विशेषत: स्त्रियों कि रक्षा करना न कि उनका अपहरण करना । तु श्रीराम कि पत्नी सीता को छोड़ दे अन्यथा मुझ से युद्ध के लिए उद्घत हो जा । उसने रावण को रोकने और और पराजित करने का प्रयत्न किया । उसने रावण को रक्त-रंजित कर दिया, लेकिन निरस्त्र जटायु अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित रावण को परास्त न कर सका ।दुष्ट रावण ने अपनी तलवार से उसके दोनों पंख काट डाले । श्रीराम को सीता अपहरण की सुचना देने के लिए उसने अपने प्राणों को रोक रखा था । उसने राम को सीता-अपहरण कि सुचना दी और कहा कि रावण सीताजी को दक्षिण दिशा में आकाश मार्ग से ले गया । जटायु ने राम को रावण के वंश का परिचय दिया और उसके प्राण पखेरू उड़ गये । राम जटायु कि प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि पक्षिराज जटायु मेरे लिए वैसे ही पूजनीय व माननीय हैं जैसे महायशस्वी पिता दशरथ । श्रीराम ने दु:खी होकर पक्षिराज जटायु के शारीर को चिता पर रखा और उसमें आग लगाकर अपने बन्धु की भांति दाह-संस्कार किया ।

"एवमुक्त्वा चितां दिप्तामारोप्य पतगेश्वरम् ।
ददाह रामो धर्मात्मा स्वबन्धुमिव दु:खित: ।। अर . ६८-३१

ब्राहमण लोग परलोक वासी मनुष्य को स्वर्ग कि प्राप्ति करने के उद्धेश्य से जिन पितृ सम्बन्धी मन्त्रों का जप आवश्यक बतलाते हैं उन सबका श्रीराम ने जप किया । फिर दोनों भाइयों ने गोदावरी नदी के तट पर जाकर जटायु के लिए जलांजलि दी । तर्पण करने के बाद जटायु के पितृ तुल्य भाव रखकर राम-सीता कि खोज में आगे बढ़े । श्रीराम के हांथों अग्नि संस्कार का जो सौभाग्य पिता दशरथ को नहीं मिल सका वह सौभाग्य गृधराज जटायु को मिला ।

सीता अन्वेषण के क्रम में श्रीराम आगे बढ़ते हैं । वे कबन्ध के बंधन को काटकर उसे दिव्यरूप प्रदान करते हैं । तत्पश्चात् वे शबरी के आश्रम में पहुचते हैं । शबरी तापसी और दलित थी । उसने राम का सत्कार किया । शबरी के गुरु मतंग मुनि भी दलित थे । वे वेदमंत्रों के जप से शुद्ध हुए और मंत्रोच्चार के साथ अपने शारीर को अग्नि को सौप चुके थे । शबरी श्वयं श्रीराम को बतलाती है कि यह प्रत्यक स्थली नाम वाली वेदी है । यही उसके पूज्य मुनि गुरु वृद्धावस्था के कारण श्रम से कॉपते हुए हांथों से देवताओं को फूल चढ़ाया करते थे । कबन्ध श्रीराम से

मतंग मुनि के सम्बन्ध में कहा था कि उनके शिष्यों द्वारा फल-मूल लाने में जो परिश्रम होता था उससे पसीने कि जो बूंद गिरती थी, वे ही तपस्या के प्रभाव से फूल बन जाती थीं और वे फूल कभी मुरझाते नहीं थे । ऐसी मतंग मुनि की तापसी शिष्या शबरी के जूठे बेर भगवान् श्रीराम ने खाया, यह कथा देश के कोने-कोने में फैली हुई है ।

कबन्ध ने श्रीराम से सुग्रीव के सम्बन्ध में कहा था कि सुग्रीव ऋष्यमूक पर्वत पर रहते हैं । वहाँ के राजा हैं । वहाँ वानर जाति के हनुमान, अंगद और ऋक्ष जनजाति के जाम्बवान् जी जैसे वीर योद्धा रहते हैं ।

हनुमान जी रामायण में राम और सीता के बाद सबसे महत्वपूर्ण पात्र प्रतीत होते हैं । वर्तमान युग में भारतवर्ष के सबसे अधिक पूजे जाने वाले देवों में इनका नाम आता है । हनुमान जी ने अनेक अलौकिक कार्य किये । समुद्र को लांघकर लंका पहुचने के बाद अशोक वाटिका में वृक्ष पर बैठकर उन्हें सीता माता के दर्शन में सफलता मिली । वृक्ष पर बैठे हुए ही उन्होंने रात बितायी । रात के अंतिम प्रहार में उन्होंने लंका में छह अंगोंसहित वेदों के विद्वानो एवं श्रेष्ठ यज्ञ करने वाले ब्रह्म राक्षसों के वेदमंत्रोंच्चारण का श्रवण किया-

"षडङ् गवेडविदुषां कतु प्रवरयाजिनाम् ।
शुश्राव ब्रह्माघोषान् से विरात्रे ब्रहारक्षसाम् ।। सु. का. १८-२

इस श्लोक से सिद्ध होता है कि लंका के राक्षस या उनमें से एक वर्ग के लोग चारों वेदों और छः वेदाङ्गों के निष्णात विद्धवान थे । उन्हें सस्वर वेदपाठ का अभ्यास था । शिवताण्डवस्तोत्र, रावण- संहिता, रावण कि कृति मानी जाती है ।

हनुमानजी नीति निपुण और व्यव्हारपतु थे । सीताजी से वार्तालाप करते समय उन्होंने बोलचाल कि संस्कृति भाषा में बात करना उचित समझा, क्योंकि पांडित्यपूर्ण संस्कृत बोलने से सीताजी को संदेह हो सकता है कि शायद यह रावण है ।

"यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम् ।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति ।। सु. का. ३०-१८

हनुमानजी अशोकवाटिका को नस्ट-भ्रष्ट कर मेघनाद के ब्रह्मा-पाश में आब्ध्व होकर रावण के पास पहुचते हैं । रावण उन्हें मृत्युदण्ड देना चाहता है । विभीषण उसे नीति के अनुसार मृत्युदण्ड दूत के लिए अनुचित बताकर अन्यदण्ड देने का सुझाव देते हैं । रावण की मृत्यु के बाद विभीषण कहता है कि यह व्यक्ति अग्निहोत्री महातेजस्वी, वेदांतवेत्ता, यज्ञ-यागादी कर्मकांड में श्रेष्ठशूर, अग्रणी पुरोहित था । अब यह प्रेतभाव को प्राप्त हुआ है । अतः आपकी कृपा से मै प्रेत्य-कर्म करना चाहता हूँ । तत्पश्चात् श्रीराम विभीषण से कहते हैं-वैर जीवनकाल तक ही रहता है, मरने के बाद उसका अन्त हो जाता है । हमारा प्रयोजन सिद्ध हो चूका है । अतः आप तत्काल प्रेत्य-संस्कार प्रारम्भ करें । जैसे ये आपके प्रिय हैं, वैसे ही मेरे भी स्नेहभाजन हैं ।

"मरणान्तानि वैराणि निवृर्त नः प्रयोजनम् ।
कियतामस्य संस्कारो ममाप्येष यथा तव ।। युद्ध. १०९-२५

वाल्मीकि-रामायण के उत्तरकांड में रावण तथा राक्षसों कि उत्पति कि चर्चा कि गयी है । ब्रह्माजी के पुत्र पुलस्त और राजर्षि तृणविन्दु कि पुत्री से एक पुत्र हुआ जिसे पोलास्य नाम से जाना जाता है । महर्षि पुलस्त के वेदाध्ययन के समय राजर्षि-कन्या उनके आश्रम में आयी थी और वेद-मन्त्रों को विशेषरूपेण श्रवण किया था । अतएव उसका नाम विश्रवा पड़ा । राजर्षि कन्या से उत्पन्न विश्रवामुनि द्विज जाने गये । विश्रवामुनि का विवाह महामुनि भरद्वाज कि पुत्री से हुआ जिससे उन्हें एक पुत्र प्राप्त हुआ जिसका नाम वैश्रवण हुआ । वैश्रवण को कुबेर के नाम से भी जाना जाता है । कुबेर चतुर्थलोकपाल और धन के स्वामी है । ब्रह्मा कि कृपा से उन्हें पुष्पकविमान प्राप्त हुआ । पिता जी कि आज्ञा से वे त्रिकुट पर्वत पर स्थित सूनी लंका में रहने लगे ।

विश्रवामुनि कि दूसरी पत्नी सुमाली राक्षस कि बेटी कैकसी थी । उससे रावण, कुम्भकर्ण, शूर्पणखा और विभीषण का जन्म हुआ । प्रजापति ब्रह्मा ने समुद्रगत जल कि सृष्टि कि । फिर अनेक जीव जन्तुओ को को उत्पन्न किया । सभी प्राणी भूख-प्यास से पीड़ित होकर ब्रह्माजी के पास गए और पूछा कि हम सब क्या करें ? ब्रह्माजी ने उनसे जल कि रक्षा करने के लिए कहा । किन्तु उनमें से कुछ ने रक्षा का भर लिया और कुछ ने यक्षण (पूजा) का । जिनलोगों ने रक्षा का भर लिया उन्हें राक्षस और जिन लोगों ने यक्षण का भार लिया उन्हें यक्ष कहा गया ।

"रक्षाम इति यैरुक्तं राक्षसास्ते भवन्तु वः ।
यक्षाम इति यैरुक्तं यक्षा एवं भवन्तु वः ।।" उत्त. क. ४-१३

रामायण में राक्षसों का उपर्युक्त अर्थ ग्राह्य है ।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरकाण्ड में कायार्थी कुत्ते को श्रीराम ने ऐसा न्याय दिया, जो रामराज्य के आदर्श न्याय का सूचक है । रामायण में फरियादी को कार्यार्थी कहा गया है । श्रीराम प्रतिदिन निरीह नागरिकों को न्याय देने के लिए धर्मासन पर बैठते है । लक्ष्मण कार्यार्थी का पता लगाते थे और कार्यार्थी के आने पर तुरंत कारवाई होती थी । एक दिन कार्यार्थी कुत्ते ने लक्ष्मण से कहा कि में राजा राम को ही बताउगा ।

श्रीराम कि अनुमति प्राप्तकर लक्ष्मण जी कुत्ते को तत्काल बुलाकर उनके समक्ष प्रस्तुत किया । कुत्ते ने श्रीराम से कहा कि सर्वार्थसिद्ध नामक एक भिक्षु है । उसने अकारण मुझ पर प्रहार किया है । कुत्ते ने अपना फटा सिर राम को दिखलाया । राम ने सर्वार्थसिद्ध को बुलाने के लिए द्वारपाल को भेजा । राम ने उससे कुत्ते पर प्रहार करने का कारण पूछा । उस भिक्षु ने कहा कि क्रोध के कारण ऐसा प्रहार हो गया । में भूख से पीड़ित था । भिक्षाटन के लिए घूम रहा था । यह नीच कुत्ता रास्ते में खड़ा हो गया । क्रोध के कारण मैंने इसे मार दिया । अत: आप मुझे दण्ड दें । श्रीराम दण्ड के सम्बन्ध में मंत्रियों से विचार कर रहे थे तभी कुत्ते ने कहा आप इस ब्राह्मण को किसी मठ का महंत बना दीजिए । यह बात सुनकर सभी आश्चर्यचकित हुए, किन्तु श्वान ने महंत पद के प्रभाव को बताते हुए कहा कि महंत पद पर रहने वाला जब कोई पाप कर्म करता है तब श्वान योनि में जन्म लेता है । इसीलिए इस क्रोधी ब्राह्मण को महंत बनाने कि याचना करता हूँ । वस्तुतः रामराज्य में श्वान को भी दण्ड दिलाने का विधान था । रामराज्य में विधवाओं को विलाप नहीं होता था । साँप, हाथी या रोग का भय नहीं था । सभी प्रसन्न और धर्मपरायण थे । अतः, हिंसा नहीं करते थे । समाज में डाकू नहीं था, अनर्थ नहीं होता था । बूढों के रहते बच्चों कि मृत्यु नहीं होती थी । राम तपस्वी वनवासी होकर भी धर्मपरायण और कुशल प्रशासक थे ।

रामायण में सूतपुत्र सुमन्त्र दलित थे । वे राजा दशरथ के केवल सारथी और मंत्री नहीं थे, आपितु उनके राज्य में गुरु वसिष्ठ के बाद सबसे अधिक समादृत तथा प्रभावशाली व्यक्ति थे । राजा दशरथ सुमन्त्र को मंत्री सतम् कहते थे । सभी मंत्रियों मे उनका स्थान उपर था । वाल्मीकि रामायण के अनुसार शांता राजा दशरथ कि पुत्री नहीं थी । रोमपाद और दशरथ कि मैत्री थी । जब दशरथ पुत्रेष्ठि यज्ञ कररहे थे तब यज्ञ का प्रबन्ध सुमन्त्रजी ने ही किया था । सुमन्त्रजी राजा के प्रिय पात्र थे । राजा को जगाने के लिए वे स्तुति करते थे ।

"गता भगवती रात्रि: कृतं कृत्यमिदं तव ।
बुध्यस्व नृपशार्दुल कुरु कार्यमनन्तरम् ।।" अयो. १४-५३

सुमन्त्रजी कैकयी कि भर्त्सना भी करते हैं ।

श्रंगवेरपुर निषादराज गृह ने श्रीराम सत्कार किया था । उसने भरतजी का भी आतिथ्य किया था । वस्तुतः निषादराज ने नौका मंगा कर श्रीराम, सीता व् लक्ष्मण को नदी पार कराया था । रामचरितमानस में भी तुलसीदास ने लिखा है कि श्रीराम ने सुमन्त्र को देखकर पिता के सामान आदर किया ।

"राम सुमंत्रहि आवत देखा ।
आदर कीन्ह, पिता-समलेखा ।।"

इस तरह सूतकुल में उत्पन्न सुमन्त्रजी सदैव राजपरिवार में समादृत होते रहे । निषादराज गृह और श्रीराम के बीच अनन्य प्रेम था । वाल्मीकि ने श्रंगवेरपुर के राज गृह जो निषाद जाति का था, के सम्बन्ध में लिखा है- "रामस्यात्मसम: सखा " निषाद राज ने श्रीराम से कहा आपका स्वागत है, यह साड़ी पृथ्वी जो मेरे अधीन है वह आपकी है, हम आपके सेवक है, आप हमारे स्वामी हैं । आप आज से इस राज्य का शासन सम्यक् रूप से करें । कितना बड़ा त्याग-भाव प्रदर्शित किया है निषादराज गुह ने । उसने राम के स्वागत में भक्ष्य, भोज्य,पेय और लेह्य पदार्थो को प्रस्तुत किया । घोड़ों के लिए घास आदि को श्रीराम ने स्वीकार किया, किन्तु उन्होंने वनवासी के रूप में जटा धारण करने के गुह ने वट का दूध लाया और उससे श्रीराम और लक्ष्मण ने जटा बनायी । राम और गुह कि मित्रता से यह स्पष्ट है कि समाज में समरसता का भाव था । निषाद जाति और क्षत्रिय जाति के बिच कि मित्रता यह सिद्ध करती है कि आपस में कहीं कोई भेद-भाव नहीं था । भरत ने निषादराज के विभिन्न पदार्थो को खाकर यह प्रमाणित किया है कि सभी नागरिक एक सामान थे । बाली, सुग्रीव का बड़ा भाई था । वह सुग्रीव को परास्त कर उसकी पत्नी के साथ काम भाव से मिलता था । वाल्मीकि-रामायण में कवि ने यह सिद्ध किया है कि आततायी को दण्ड देने तथा अन्याय सहने वाले को मदद करना राजा का पुनीत कर्तव्य था । सुग्रीव जो बाली से प्रपीडित था, दलित और आतंकित था, उसके कल्याण के लिए उसके उद्धार के रूप में राम आद्योपांत दृष्टिगत होते है । चाहे वह अहल्या का उद्धार हो, कबन्ध का कल्याण हो या सुग्रीव कि सुरक्षा अथवा विभीषण को राजसिंघासन प्रदान करना हो । त्रेता युग में शुद्र को तप न करने का सिद्धांत को आधार मानकर राम के द्वारा शम्बूक को मृतुदंड दिया जाना कहीं से यथोचित प्रतीत नहीं होता है, क्योंकि वैश्य पिता और शुद्रा माता से उत्पन्न श्रवण कुमार को वेद के अध्ययन या तप के लिए कोई प्रतिबन्ध नहीं था । तब शम्बूक को शुद्र मानकर तप का आचरण को नीति विरुद्ध करार कर प्राण दण्ड देना राम के चरित्र को घूमिल करने का षड्यंत्र प्रतीत होता है । वस्तुतः राम तो दलितों के उद्धारक थे । उनके सम्पूर्ण जीवन में जो निर्बल, असहाय, प्रपिडित, बेबस है, उसके कल्याण के लिए राम सदैव तत्पर प्रतीत होते है । मर्यादा कि सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले राम के माध्यम ग्रंथकार ने यह प्रमाणित करने कि चेष्टा कि है कि वाल्मीकि-रामायण में दलितों का भी वही स्थान था जो ब्राह्मणों का था । एक ओर गुरु वसिष्ठ ब्राह्मण और पूज्य हैं तो दूसरी ओर सुमन्त्र सुतकुल में उत्पन्न होकर वसिष्ठ से तनिक भी कम महत्वपूर्ण नहीं है ।

विभीषण लंकापति रावण का भाई और धर्मात्मा है । उसका शोसन और दालान रावण के हांथों होता है । लंका को छोड़कर वह राम कि शरण में आता है । शरणागतवत्सल राम विभीषण को अभयदान देते हैं । अत्याचारी रावण के अत्याचार से उसे उबारते हैं । अन्ततः उसे लंका का अधिपति बनाते हैं । इस तरह उपर्युक्त समस्त उदाहरणों से सिद्ध होता है कि वाल्मीकि-रामायण में दलित किसी खास जाति विशेष के अर्थ में प्रयुक्त नहीं है, आपितु दलित शब्द विस्तृत अर्थ में प्रयोग हुआ है । जिसका दालान किया जाय, शोषण, अपहरण किया जाए ऐसे तमाम लोगों को दलित कि कोटि में रखा गया है । जाति के आधार पर समान्यतः समाज में जो दलित या शुद्र थे वे उपयोगिता, महत्व और कर्म कि दृष्टी से किसी से कम नहीं थे । रामायण में सभी नागरिको कि समानता दृष्टीगत होती है ।

सन्दर्भ-सूची

१. श्रीमद् वाल्मीकि-रामायण:- प्रथम तथा द्वितीय भाग, गीता प्रेस, गोरखपुर ।
२. चाणक्य नीति दर्पण:- चाणक्य
३. गीतगोविन्द:- जयदेव
४. किरातार्जुनियम्:- भारवि
५. प्रभोध चंद्रोदय:- कृष्ण मिश्र
६. संस्कृत हिंदीकोश
७. शब्दार्थ चिंतामणिकोश
८. शुक्रनीति:- शुक्राचार्य
९. रामायण कालीन समाज:- शांति कुमार नानुरामव्यास
१०. रामायण कालीन संस्कृति:- शांति कुमार नानुरामव्यास
११. रामायण का आचार दर्शन:- अम्बा प्रसाद श्रीवास्तव
१२. शूद्रों का प्राचीन इतिहास:- रामशरण शर्मा
१३. भारतीय साहित्य में सीता का स्वरुप और विकास:- सत्यदेव
१४. महारानी कैकई – वन्दनीया अथवा निंदनीया:- महाराजा रामकिंकर जी
१५. दलित देवो भव :- आचार्य किशोर कुणाल
१६. उत्तर राम चरितम्:- भवभूति
१७. रामचरितमानस:- तुलसीदास